

हृदय प्रशांत क्षेत्र का महत्त्व

प्रलम्ब के लिये:

दक्षिण चीन सागर, व्यापक रणनीतिक साझेदारी, पेरिस शांति समझौता

मेन्स के लिये:

एशिया-प्रशांत क्षेत्र में संयुक्त राज्य अमेरिका के आगमन का चीन की तुलना में प्रमुख एशियाई देशों और दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों पर प्रभाव

स्रोत: द हट्टि

चर्चा में क्यों?

अमेरिकी राष्ट्रपति की वयितनाम यात्रा के दौरान वयितनाम की कम्युनिसट पार्टी के महासचिव और अमेरिकी राष्ट्रपति की मुलाकात दोनों देशों के मध्य द्विपक्षीय संबंधों में एक नए चरण का प्रतीक है।

- दोनों देशों ने वर्ष 2013 में बनी व्यापक साझेदारी को व्यापक रणनीतिक साझेदारी का रूप दिया।

अमेरिका और वयितनाम के संबंधों का इतहास:

- संयुक्त राज्य अमेरिका और वयितनाम के बीच संबंधों का इतहास जटिल है, इसे समझने के लिये सबसे अच्छा दृष्टांत वर्ष 1955 से 1975 तक चला **वयितनाम युद्ध** है। यह संघर्ष **शीत युद्ध** के दौरान उत्पन्न हुआ जब **सोवियत संघ** तथा चीन द्वारा समर्थित उत्तरी वयितनाम ने दक्षिण वयितनाम के साथ पुनः एकजुट होने की मांग की, इस मांग का संयुक्त राज्य अमेरिका एवं अन्य पश्चिमी सहयोगी देशों द्वारा समर्थन किया गया था।
 - युद्ध के परिणामस्वरूप वयितनाम में जानमाल की भारी क्षति हुई और व्यापक वनाश हुआ तथा अमेरिकी समाज पर इसका गहरा प्रभाव पड़ा।
- वर्ष 1975 में **उत्तरी वयितनामी सेना के हाथों साइगॉन के पतन** के साथ युद्ध समाप्त हो गया, जिससे कम्युनिसट नयित्रण के तहत वयितनाम का वलिय हुआ। यह अमेरिका-वयितनाम संबंधों में एक महत्त्वपूर्ण मोड़ था।
- वर्ष 1995 में **संयुक्त राज्य अमेरिका ने वयितनाम के साथ राजनयिक संबंधों को सामान्यीकृत किया** और तब से दोनों देशों के बीच आपसी आर्थिक सहयोग तथा आदान-प्रदान में काफी वृद्धि हुई है।
- वयितनाम युद्ध उनके इतहास का एक प्रमुख हिससा बना हुआ है, साथ ही वर्तमान में **संयुक्त राज्य अमेरिका और वयितनाम के बीच व्यापार, सुरक्षा सहयोग तथा समान क्षेत्रीय चुनौतियों के समाधान पर ध्यान केंद्रित करते हुए अधिक सकारात्मक व रचनात्मक संबंध स्थापित हुए हैं।**

हृदय-प्रशांत क्षेत्र:

- परचिय:**
 - हृदय-प्रशांत क्षेत्र** एक हाल में विकसित हुई अवधारणा है। लगभग एक दशक पहले की बात है जब वशिव ने हृदय-प्रशांत क्षेत्र के बारे में जानना-समझना शुरू किया था, इसकी लोकप्रियता और महत्त्व की वृद्धि प्रमुख रही है।
 - इस शब्द की लोकप्रियता के पीछे एक कारण एक सार्वभौमिक समझ है जो बताता है **कि भारतीय और प्रशांत महासागर एक संबद्ध रणनीतिक मंच हैं।**
 - प्रत्येक राष्ट्र हृदय-प्रशांत क्षेत्र की अवधारणा के वषिय में अपने लाभ एवं चिंताओं के अनुरूप समझ रखता है तथा हृदय-प्रशांत क्षेत्र की कोई पूर्ण अवधारणा व भौगोलिक सीमाएँ नहीं हैं।
- वर्तमान संदर्भ:**
 - हृदय प्रशांत क्षेत्र वशिव के सबसे अधिक आबादी वाले और आर्थिक रूप से सक्रिय क्षेत्रों में से एक है जिसमें चार महाद्वीप शामिल हैं:

एशिया, अफ्रीका, ऑस्ट्रेलिया व अमेरिका।

- इस क्षेत्र की गतिशीलता और जीवन शक्ति से पूरा विश्व अवगत है, विश्व की 60% आबादी और वैश्विक आर्थिक उत्पादन का 2/3 हिस्सा इस क्षेत्र को वैश्विक आर्थिक केंद्र बनाता है।

■ हृदि-प्रशांत पर भारत का परंपरिकर्ष्य:

- सुरक्षा संरचना के लिये दूसरों के साथ सहयोग करना: भारत के कई विशेष साझेदार, अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया, जापान और इंडोनेशिया मूल रूप से चीन का मुकाबला करने के लिये दक्षिण-चीन सागर तथा पूर्वी-चीन सागर में भारत की उपस्थिति चाहते हैं।

- हालाँकि भारत इस क्षेत्र में शांति और सुरक्षा तंत्र के लिये सहयोग करना चाहता है। समान समृद्धि और सुरक्षा के लिये देशों को वार्त्ता के माध्यम से क्षेत्र के लिये एक सामान्य नियम-आधारित व्यवस्था विकसित करने की आवश्यकता है।

- व्यापार और निवेश में समान हिस्सेदारी: भारत हृदि-प्रशांत क्षेत्र में नियम-आधारित, खुले, संतुलित और स्थिर व्यापारिक माहौल का समर्थन करता है, जो व्यापार तथा निवेश के मामले में सभी देशों को ऊपर उठाता है।

- यह वैसा ही है जैसा देश क्षेत्रीय व्यापक आर्थिक साझेदारी (Regional Comprehensive Economic Partnership- RCEP) से अपेक्षा करता है।

■ वयितनाम जैसे आसयान (ASEAN) देशों के लिये हृदि-प्रशांत क्षेत्र का महत्त्व:

- एकीकृत आसयान: चीन के विपरीत भारत एक एकीकृत आसयान चाहता है, विभाजित नहीं। चीन कुछ आसयान सदस्यों को दूसरों के खिलाफ खड़ा करने का प्रयास करता है, जिससे 'फूट डालो और राज करो' की रणनीति लागू कया जा सके।

- चीन के साथ सहयोगपूर्ण कार्य: आसयान हृदि-प्रशांत के अमेरिकी संस्करण का अनुपालन नहीं करता है, जो चीनी प्रभुत्व को नियंत्रित करना चाहता है। आसयान उन तरीकों की तलाश कर रहा है जिनके माध्यम से वह चीन के साथ मलिकर कार्य कर सके।



हृदि-प्रशांत क्षेत्र का महत्त्व:

■ हृदि-प्रशांत क्षेत्र अफ्रीका से अमेरिका तक फैला हुआ है:

- अमेरिका के लिये हृदि-प्रशांत एक स्वतंत्र, खुले, समावेशी क्षेत्र का प्रतीक है। इसमें विश्व के सभी राष्ट्र और इसमें हिस्सेदारी रखने वाले अन्य देश शामिल हैं।

- अपने भौगोलिक आयाम में अमेरिका अफ्रीका के तटों से लेकर अमेरिका के तटों तक के क्षेत्र को मानता है।

■ एकल प्रतिभागी के प्रभुत्व के विरुद्ध:

- भारत इस क्षेत्र का लोकतंत्रीकरण करना चाहता है। पहले इस क्षेत्र में अमेरिकी प्रभुत्व हुआ करता था। हालाँकि यह भय अभी भी मौजूद है कि इस क्षेत्र में अब चीन का प्रभुत्व हो जाएगा। भारत की तरह अमेरिका भी इस क्षेत्र में किसी भी प्रतिभागी का आधिपत्य नहीं चाहता।

■ भू-राजनीतिक महत्त्व:

- हृदि प्रशांत क्षेत्र भारत, चीन, जापान, ऑस्ट्रेलिया और इंडोनेशिया सहित विश्व के कुछ सबसे अधिक आबादी वाले तथा आर्थिक रूप से गतिशील देशों का आवास स्थान है।

- आर्थिक और राजनीतिक शक्ति का यह संकेंद्रण इसे वैश्विक भू-राजनीतिक एक महत्त्वपूर्ण केंद्र बनाता है।

■ आर्थिक महत्त्व:

- यह क्षेत्र वैश्विक अर्थव्यवस्था का एक प्रमुख चालक है। इसमें प्रमुख समुद्री व्यापार मार्ग शामिल हैं, जैसे कि मलक्का जलडमरूमध्य,

जसिके माध्यम से वशिव के वुयापार का एक महत्त्वपूर्ण हसिसा प्रवाहति होता है ।

- वशिव के कई सबसे वुयस्त और सबसे महत्त्वपूर्ण बंदरगाह हदि प्रशांत में स्थति हैं, जो एशया, यूरोप एवं अफ्रीका के बीच वुयापार को सुवधाजनक बनाते हैं ।

■ **सुरक्षा और सामरकि चतिाँ:**

- हदि प्रशांत परमुख शक्तियों, वशिष रूप से संयुक्त राज्य अमेरिका, चीन, भारत और रूस के बीच बढ़ती रणनीतिक प्रतस्पर्धा का कषेत्तर है । परमाणु-सशस्त्र राज्यों की उपस्थति और दक्षणि चीन सागर वविाद जैसे अनसुलझे कषेत्तीय वविाद, इसकी रणनीतिक जटलिता को बढ़ाते हैं ।

■ **चीन के उत्थान को संतुलति करना:**

- वैश्वकि आर्थकि और सैन्य शक्तिके रूप में चीन का उदय हदि प्रशांत के महत्त्व का एक केंद्रीय कारक है ।
- कषेत्तर के कई देश समान वचिारधारा वाले देशों के साथ गठबंधन और साझेदारी को मजबूत करके चीन के प्रभाव को संतुलति करने तथा अपनी सुरक्षा सुनशिचति करने का प्रयास कर रहे हैं ।

■ **समुद्री सुरक्षा:**

- समुद्री वुयापार मार्गों की सुरक्षा सुनशिचति करना हदि-प्रशांत कषेत्तर के देशों के लयि एक बड़ी चतिा का वषिय है ।
- समुद्री डकैतों, कषेत्तीय वविाद और समुद्री मार्गों की सुरक्षा की आवश्यकता जैसे मुद्दे समुद्री सुरक्षा को सर्वोच्च प्राथमकिता देते हैं ।

■ **कषेत्तीय संगठन और मंच:**

- आसयान (ASEAN), **कवाड (QUAD)** तथा **हदि महासागर रमि एसोसिएशन (IORA)** जैसे वभिन्न कषेत्तीय संगठन और मंच सक्रयि रूप से कषेत्तीय मुद्दों का समाधान करने, आर्थकि सहयोग को बढ़ावा देने एवं सुरक्षा बढ़ाने में लगे हुए हैं ।

■ **कनेक्टविटि और बुनयािदी ढाँचा वकिस:**

- हदि-प्रशांत कषेत्तर में बुनयािदी ढाँचे के वकिस, कनेक्टविटि परयोजनाओं और आर्थकि एकीकरण पर ध्यान बढ़ रहा है ।
- चीन की **बेल्ट एंड रोड इनशिऐटिवि (BRI)** और अमेरिका की "फ्री एंड ओपन हदि-प्रशांत" रणनीति जैसी पहल का उद्देश्य कषेत्तर के आर्थकि एवं राजनीतिक परदृश्य को आयाम देना है ।

■ **पर्यावरणीय और पारस्थितिकि महत्त्व:**

- हदि-प्रशांत कषेत्तर, प्रवाल भतितियों और समुद्री जैव वविधिता सहति वविधि पारस्थितिकि तंत्रों का गढ़ है ।
- जलवायु परिवर्तन और अन्य पर्यावरणीय मुद्दे, जैसे प्लास्टिक प्रदूषण और अत्यधिक मतस्यन, वैश्वकि चतिा का वषिय बने हुए हैं, क्योंकि ये मुद्दे न केवल कषेत्तर के देशों को बल्कि पूरे ग्रह को प्रभावति करते हैं ।

UPSC सविलि सेवा परीक्षा, वगित वर्ष के प्रश्न

??????:

प्रश्न. भारत की "पूर्व की ओर देखो नीति" के संदर्भ में नमिनलखिति कथनों पर वचिार करें: (2011)

1. भारत पूर्वी एशयाई मामलों में खुद को एक महत्त्वपूर्ण कषेत्तीय खलिाड़ी के रूप में स्थापति करना चाहता है ।
2. भारत शीत युद्ध की समाप्ति से उत्पन्न शून्यता को दूर करना चाहता है ।
3. भारत दक्षणि पूर्व और पूर्वी एशया में अपने पड़ोसियों के साथ ऐतहिसकि और सांस्कृतिक संबंधों को बहाल करना चाहता है ।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

- (a) केवल 1
- (b) केवल 1 और 3
- (c) केवल 3
- (d) 1, 2 और 3

उत्तर: D

??????:

प्रश्न. (2021) नई त्रि-राष्ट्र साझेदारी AUKUS का उद्देश्य भारत-प्रशांत कषेत्तर में चीन की महत्त्वाकांक्षाओं का मुकाबला करना है । क्या यह कषेत्तर में मौजूदा साझेदारियों को खत्म करने जा रहा है? वर्तमान परदृश्य में AUKUS की शक्ति और प्रभाव पर चर्चा कीजयि । (2021)

